( अमीरे अहले सुन्नत की किताब
"फ़ैज़ाने रमज़ान" से लिये गए मवाद की पहली क़िस्त )

ANWARE FAIZANE RAMAZAN (HINDI)

# अन्वारे फ़ैज़ाने रमज़ान

- माहे नुज़ूले क़ुरआन 02
- महीनों के नाम की वज्ह 02
- रमज़ानुल मुबारक के चार नाम 07
- जन्नत में आक़ा के पड़ोस की बिशारत 11
- बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें 15



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

**मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़

**शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप हिम्मत कर के फ़ैज़ाने र-मज़ान ( हर साल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में ) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे।**

**दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ص۲۷حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **माहे र-मज़ान** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है, **र-मज़ानुल मुबारक** में हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। (मिरआत, जि. 3, स. 137) नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है, अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर आमीन कहते हैं और फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ : **"र-मज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्तार तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।"** (اَلتَّرغیب والتَّرهیب ج ۲ ص ٥٥ حدیث ٦)

**इबादत का दरवाज़ा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रोज़ा इबादत का दरवाज़ा है।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص١٤٦حدیث٢٤١٥)

**नुज़ूले क़ुरआन : इस** माहे मुबारक की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस में क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया है। चुनान्चे पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत 185 में मुक़द्दस क़ुरआन में ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَلَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** र-मज़ान का महीना, जिस में क़ुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम ह़क़ गुज़ार हो।

**महीनों के नाम की वज्ह : र-मज़ान,** येह "रम्ज़ुन" से बना जिस के मा'ना हैं : "गरमी से जलना।" क्यूं कि जब महीनों के नाम क़दीम अ़-रबों की ज़बान से नक़्ल किये गए तो उस वक़्त जिस क़िस्म का मौसिम था उस के मुत़ाबिक़ महीनों के नाम रख दिये गए इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त र-मज़ान सख़्त गर्मियों में आया था इसी लिये येह नाम रख दिया गया। (اَلنِّهَايَة لِابْنِ الْاَثِير ج٢ ص٢٤٠)

**ह़ज़रते** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जिस मौसिम में जो महीना था उसी से उस का नाम हुवा। जो महीना गरमी में था उसे **र-मज़ान** कह दिया गया और जो मौसिमे बहार में था उसे **रबीउ़ल अव्वल** और जो सर्दी में था जब पानी जम रहा था उसे **जुमादल ऊला** कहा गया।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 205)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد



www.dawateislami.net

**सुर्ख़ याकूत का घर : हज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुर्ख़ याकूत का घर** बनाता है। पस जो कोई माहे र-मज़ान का **पहला रोज़ा** रखता है तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, और उस के लिये सुब्ह़ से शाम तक 70 **हज़ार फ़िरिश्ते** दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह **सज्दा** करता है उस के हर सज्दे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है कि उस के साए में (घोड़े) सुवार **पांच सो बरस** तक चलता रहे।" (شُعَبُ الایمان ج٣ ص ٣١٤ حدیث ٣٦٣٥ مُلَخَّصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!     صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**नाबीना भान्जी बीना हो गई ( म-दनी बहार ) : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ह़ासिल होने की सूरत में **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की ब-र-कतें लूटने का बहुत ज़ेहन बनता है वरना बुरी सोह़बतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। आइये ! गुनाहों की दलदल में धंसे हुए एक **फ़नकार** की "म-दनी बहार" सुनिये जिसे दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** ने रह़मते इलाही से म-दनी रंग चढ़ा दिया और उस की नाबीना भान्जी को बीना बना दिया ! चुनान्चे ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई **फ़नकार** थे, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़न्कशन्ज़ के अन्दर ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न गुनाहों का एह़सास। सह़राए मदीना बाबुल मदीना

कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (1424 सि.हि. 2003 सि.ई.) में ह़ाज़िरी के लिये एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के तरग़ीब दिलाई। ज़हे नसीब! उन्हें उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** में उन्हें अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, वोह अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सके और फूट फूट कर रोने लगे, बस रोने ने काम दिखा दिया! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मिल गया और उन्हों ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से **तौबा** कर ली और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया। ब तारीख़ 25 दिसम्बर 2004 ई. **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवानगी के वक़्त उन्हें छोटी बहन का फ़ोन आया, उन्हों ने भर्राई हुई आवाज़ में अपने यहां होने वाली **नाबीना बच्ची** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा : डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। उन इस्लामी भाई ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में दुआ़ करूंगा। उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी दुआ़एं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले **आ़शिक़ाने रसूल** से भी दुआ़एं करवाईं। जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटे तो दूसरे ही दिन छोटी बहन ने फ़ोन पर ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनाई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था!** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ उन्हें बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें भी ह़ासिल हुईं।

*आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र — रोशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो*

*आप को चारागर, ने गो मायूस कर — भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



www.dawateislami.net

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ़-शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की म-दनी बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की मशक़्क़त भी राह़त में ढल जाएगी।

*टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द*
*ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

**पांच ख़ुसूसी करम : ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि रह़मते आ़-लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में **पांच चीजें** ऐसी अ़त़ा की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं : ﴾1﴿ जब **र-मज़ानुल मुबारक** की पहली रात होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी भी अ़ज़ाब न देगा ﴾2﴿ शाम के वक़्त इन के मुंह की बू (जो भूक की वज्ह से होती है) **अल्लाह तआ़ला** के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बेहतर है ﴾3﴿ फ़िरिश्ते हर रात और दिन इन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते रहते हैं ﴾4﴿ **अल्लाह तआ़ला** जन्नत को हुक्म फ़रमाता है : "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न्क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राह़त पाएंगे" ﴾5﴿ जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह **लय-लतुल क़द्र** है ?" इर्शाद फ़रमाया : नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि मज़दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।"

(شُعَبُ الایمان ج٣ص٣٠٣حدیث٣٦٠٣)

**सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه से मरवी है : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए ।" (مسلم ص ١٤٤ حديث ٢٣٣)

**काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर बन्दों को मा'लूम होता कि र-मज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ।" (ابنِ خُزَيمه ج٣ ص١٩٠ حديث١٨٨٦)

**आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान : हज़रते** सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡه फ़रमाते हैं कि "मह़बूबे रह़मान, सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मक्की म-दनी सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़-ज़मत वाला ब-र-कत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम[1] तत़व्वोअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने **फ़र्ज़** अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में **70 फ़र्ज़** अदा किये । येह महीना **सब्र** का है और **सब्र** का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का **रिज़्क़** बढ़ाया जाता है । जो इस में रोज़ादार को **इफ़्त़ार** कराए उस के गुनाहों के लिये **मग़फ़िरत** है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और इस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो ।" हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 : यहां क़ियाम से मुराद तरावीह़ है ।



www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह तआ़ला** येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्तार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को **अल्लाह तआ़ला** मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा, यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए । येह वोह महीना है कि इस का **अव्वल** (या'नी इब्तिदाई दस दिन) **रह़मत** है और इस का **औसत़** (या'नी दरमियानी दस दिन) **मग़्फ़िरत** है और **आख़िर** (या'नी आख़िरी दस दिन) **जहन्नम से आज़ादी** है । जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) **अल्लाह तआ़ला** उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा । इस महीने में चार बातों की कसरत करो, उन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं । पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे वोह येह हैं : ﴾1﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना ﴾2﴿ इस्तिग़्फ़ार करना । जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (या'नी बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : (1) **अल्लाह तआ़ला** से जन्नत त़लब करना (2) जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना ।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۳۰۵ حدیث۳۶۰۸، ابنِ خُزَیمه ج ۳ ص ۱۹۲ حدیث۱۸۸۷)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी जो ह़दीसे पाक बयान की गई उस में माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की रह़मतों, ब-र-कतों और अ़-ज़-मतों का ख़ूब ख़ूब तज़्किरा है । इस माहे मुबारक में **कलिमा** शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार **इस्तिग़्फ़ार** या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए़ **अल्लाह तआ़ला** को राज़ी करने की सई (कोशिश) करनी है और **अल्लाह तआ़ला** से जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी हैं ।

**र-मज़ानुल मुबारक के चार नाम : अल्लाहु अक्बर** عَزَّوَجَلَّ ! माहे र-मज़ान का भी क्या ख़ूब फ़ैज़ान है ! **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नई़मी** में फ़रमाते हैं : "इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं ﴾1﴿ **माहे र-मज़ान** ﴾2﴿ **माहे सब्र** ﴾3﴿ **माहे मुआसात और** ﴾4﴿ **माहे वुस्अ़ते रिज़्क़** ।" **मज़ीद** फ़रमाते हैं : "रोज़ा **सब्र**



www.dawateislami.net

है जिस की जज़ा रब عَزَّوَجَلَّ है और वोह इसी महीने में रखा जाता है। इस लिये इसे **माहे सब्र** कहते हैं। **मुआसात** के मा'ना हैं भलाई करना। चूंकि इस महीने में सारे मुसल्मानों से ख़ास कर अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदारों) से भलाई करना ज़ियादा सवाब है इस लिये इसे **माहे मुआसात** कहते हैं इस में रिज़्क़ की फ़राख़ी (या'नी ज़ियादती) भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम माहे वुस्अ़ते रिज़्क़ भी है।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

## "माहे र-मज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से 13 म-दनी फूल

(येह तमाम म-दनी फूल तफ़्सीरे नईमी जिल्द 2 से लिये गए हैं)

1. **का'बए** मुअ़ज़्ज़मा मुसल्मानों को बुला कर देता है और येह आ कर **रह़मतें** बांटता है। गोया वोह (या'नी का'बा) कूंवां है और येह (या'नी र-मज़ान शरीफ़) दरिया, या वोह (या'नी का'बा) दरिया है और येह (या'नी र-मज़ान) बारिश।
2. **हर** महीने में ख़ास तारीखें़ और तारीख़ों में भी ख़ास वक़्त में इ़बादत होती है, म-सलन बक़र ईद की चन्द (मख़्सूस) तारीख़ों में **ह़ज**, मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ अफ़्ज़ल, मगर **माहे र-मज़ान** में हर दिन और हर वक़्त इ़बादत होती है। रोज़ा इ़बादत, इफ़्त़ार इ़बादत, इफ़्त़ार के बा'द तरावीह़ का इन्तिज़ार इ़बादत, तरावीह़ पढ़ कर स-ह़री के इन्तिज़ार में सोना इ़बादत, फिर स-ह़री खाना भी इ़बादत, अल ग़रज़ हर आन में ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की शान नज़र आती है।
3. **र-मज़ान** एक भट्टी है जैसे कि भट्टी गन्दे लोहे को साफ़ और साफ़ लोहे को मशीन का पुर्ज़ा बना कर क़ीमती कर देती है और सोने को ज़ेवर बना कर इस्ति'माल के लाइक़ कर देती है, ऐसे ही **माहे र-मज़ान** गुनहगारों को पाक करता और नेक लोगों के द-रजे बढ़ाता है।
4. **र-मज़ान** में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना मिलता है।
5. **बा'ज़** उ़-लमा फ़रमाते हैं कि जो र-मज़ान में मर जाए उस से सुवालाते क़ब्र भी नहीं होते।



www.dawateislami.net

6 **इस** महीने में शबे क़द्र है, गुज़श्ता आयत (या'नी पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह आयत 185) से मा'लूम हुवा कि कुरआन र-मज़ान में आया और दूसरी जगह फ़रमाया :

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِیۡ لَیۡلَةِ الۡقَدۡرِ ۝۱ (پ۳۰، القدر:۱)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

**दोनों** आयतों के मिलाने से मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र र-मज़ान में ही है और वोह ग़ालिबन सत्ताईसवीं शब है, क्यूं कि **लय-लतुल क़द्र** (لَیۡلَةُ الۡقَدۡر) में नव हुरूफ़ हैं और येह लफ़्ज़ सूरए क़द्र में तीन बार आया। जिस से **सत्ताईस** हासिल हुए मा'लूम हुवा कि वोह सत्ताईसवीं शब है।

7 **र-मज़ान** में दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जन्नत आरास्ता की जाती है, इस के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। इसी लिये इन दिनों में नेकियों की ज़ियादती और गुनाहों की कमी होती है जो लोग गुनाह करते भी है वोह नफ़्से अम्मारा या अपने साथी शैतान (हमज़ाद) के बहकाने से करते हैं।

8 **र-मज़ान** के खाने पीने का हिसाब नहीं। (या'नी स-हरी इफ़्तार के खाने पीने का)

9 **क़ियामत** में र-मज़ान व कुरआन रोज़ादार की शफ़ाअ़त करेंगे कि **र-मज़ान** तो कहेगा : मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे दिन में खाने पीने से रोका था और **कुरआन** अ़र्ज़ करेगा कि या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे रात में तिलावत व तरावीह़ के ज़रीए सोने से रोका।

10 **हुज़ूर** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **र-मज़ानुल मुबारक** में हर क़ैदी को छोड़ देते थे और हर साइल को अ़ता फ़रमाते थे, रब عَزَّوَجَلَّ भी र-मज़ान में जहन्नमियों को छोड़ता है, लिहाज़ा चाहिये कि र-मज़ान में नेक काम किये जाएं और गुनाहों से बचा जाए।

11 **कुरआने** करीम में सिर्फ़ र-मज़ान शरीफ़ ही का नाम लिया गया और इसी के फ़ज़ाइल बयान हुए, किसी दूसरे महीने का न सरा-हतन नाम है न ऐसे फ़ज़ाइल। महीनों में सिर्फ़



www.dawateislami.net

**माहे र-मज़ान** का नाम क़ुरआन शरीफ़ में लिया गया। औरतों में सिर्फ़ **बीबी मरयम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम क़ुरआन में आया। सहाबा में सिर्फ़ ह़ज़रते (सय्यिदुना) **ज़ैद इब्ने ह़ारिसा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का नाम क़ुरआन में लिया गया जिस से इन तीनों की अ़-ज़मत मा'लूम हुई।

(12) **र-मज़ान** शरीफ़ में इफ़्त़ार और स-ह़री के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है या'नी इफ़्त़ार करते वक़्त और स-ह़री खा कर। येह मर्तबा किसी और महीने को ह़ासिल नहीं।

(13) **र-मज़ान** में पांच हुरूफ़ हैं : ر،م،ض،ا،ن। ر से मुराद रह़मते इलाही, میم से मुराद मह़ब्बते इलाही, ض से मुराद ज़माने इलाही, اَلِف से अमाने इलाही, ن से नूरे इलाही। और **र-मज़ान** में पांच इबादात ख़ुसूसी होती हैं : रोज़ा, तरावीह़, तिलावते क़ुरआन, ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इबादात। तो जो कोई सिद्क़े दिल से येह **पांच इबादात** करे वोह उन **पांच इन्आ़मों** का मुस्तह़िक़ है। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**जन्नत सजाई जाती है : ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : बेशक **जन्नत** साल के शुरूअ़ से अगले साल तक **र-मज़ानुल मुबारक** के लिये सजाई जाती है। और फ़रमाया : र-मज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के पत्तों से बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۱۲حدیث۳۶۳۳)

**जन्नत कौन सजाता है ? : मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक

र-मज़ान के लिये सजाई जाती है" के तह़त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 142 ता 143 पर फ़रमाते हैं : या'नी ईदुल फ़ित्र का चांद नज़र आते ही, अगले र-मज़ान के लिये जन्नत की आरास्तगी (या'नी सजावट) शुरूअ़ हो जाती है और साल भर तक फ़रिश्ते इसे सजाते रहते हैं जन्नत ख़ुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए, फिर सजाने वाले फ़रिश्ते हों, तो कैसी सजाई जाती होगी, इस की सजावट हमारे वह्मो गुमान से वरा है, बा'ज़ मुसल्मान र-मज़ान में मस्जिदें सजाते हैं, वहां क़-ल-ई चूना करते हैं, झन्डियां लगाते, रोशनी करते हैं इन की अस्ल येह ही ह़दीस है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जन्नत की अ़-ज़मत की तो क्या ही बात है ! काश ! हमें बे ह़िसाब बख़्श दिया जाए और जन्नतुल फ़िरदौस में मदीने वाले आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** अहले ह़क़ की म-दनी तह़रीक है, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, **दा'वते इस्लामी** वालों पर कैसी कैसी करम नवाज़ियां होती हैं इस की एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

**जन्नत में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस की बिशारत : इस्लामी** भाइयों और इस्लामी बहनों को मुफ़्त दर्से निज़ामी करवाने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम मु-तअ़द्दिद जामिआ़त बनाम **जामिअ़तुल मदीना** क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 1427 सि.हि. में दा'वते इस्लामी के इन जामिआ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) के तक़रीबन 160 त़-ल-बए किराम ने हाथों हाथ 12 माह के लिये **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार किया। इब्तिदाअन **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** करवाने की तरकीब बनी, इस दौरान त़-लबा के जज़्बए ख़िदमते इस्लाम को मज़ीद **मदीने के 12 चांद** लग गए और उन में से तक़रीबन 77 त़-ल-बए किराम ने उम्र भर के लिये अपने आप को म-दनी क़ाफ़िलों के लिये पेश कर दिया ! इस अ़ज़ीम

क़ुरबानी पर हौसला अफ़्ज़ाई की बड़ी ज़बर दस्त सूरत बनी और वोह येह कि ख़्वाब में **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार से एक **आशिक़े रसूल** की आंखें ठन्डी हुईं, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"जिस जिस ने अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दिया है मैं उन को जन्नत के अन्दर अपने साथ रखूंगा।"** ख़्वाब देखने वाले आशिक़े रसूल के दिल में ह़सरत हुई कि काश ! सद करोड़ काश ! मुझे भी इन ख़ुश नसीबों में शामिल कर लिया जाता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे दिल की बात जान ली और फ़रमाया : "अगर तुम भी इन में शामिल होना चाहते हो तो अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दो।"

*सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र*
*म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल को बिशारते उ़ज़्मा मुबारक हो ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़्र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त-वरों के लिये येह **म-दनी ख़्वाब** देखा गया है اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएंगे। ताहम येह याद रहे ! कि ग़ैरे नबी जो ख़्वाब देखे वोह शरअ़न हुज्जत (या'नी दलील) नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को यक़ीनी तौर पर जन्नती नहीं कहा जा सकता।

*इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर*
*साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब*

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

**हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**र-मज़ान शरीफ़** की हर शब आस्मानों में सुब्ह़े सादिक़ तक एक मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता) येह निदा (ए'लान) करता है : **ऐ भलाई त़लब करने वाले !** इरादा पुख़्ता कर ले और ख़ुश हो जा, और **ऐ बुराई का इरादा रखने वाले !** बुराई से बाज़ आ जा। **है कोई मग़्फ़िरत का त़लब गार !** कि उस की त़लब पूरी की जाए। **है कोई तौबा करने वाला !** कि उस की तौबा क़बूल की जाए। **है कोई दुआ़ मांगने वाला !** कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए। **है कोई साइल !** कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। **अल्लाह तआ़ला र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है, और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है।**"

(شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٠٤حديث٣٦٠٦)

**मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक** की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं। **अल्लाह तआ़ला** के फ़ज़्लो करम से **रह़मत** के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब **मग़्फ़िरत** के परवाने तक़्सीम होते हैं। काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले **माहे र-मज़ान**, सरवरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रह़मत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए। इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं :

*तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े मह़शर* *येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 188)

**रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई :** **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो **अल्लाह तआ़ला**

अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा और **हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए़ के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है।** फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है, मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : **"ऐ गुरौहे मलाएका !** उस मज़दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने इन सब को बख़्श दिया।" (جَمْعُ الْجَوامِع ج۱ص۳٤٥حدیث۲۰۳٦)

**जुमुआ़ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़्त़ार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वज्ह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुम्अ़रात को ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब तक) की **हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अ़ज़ाब के ह़क़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।"** (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج ۳ ص ۳۲۰ حدیث ٤۹٦۰)

**आ़शिक़ाने र-मज़ान !** बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मो इकराम का ज़िक्र है। ऐ काश ! **अल्लाह तआ़ला** हम गुनहगारों को भी मग़्फ़िरत याफ़्तगान में शामिल कर ले। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلَّم

*इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया — पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया*
*हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ — लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**ख़र्च में कुशा-दगी करो :** **हज़रते** सय्यिदुना ज़मुरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रह़मते आ-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "माहे र-मज़ान में (घर वालों के) ख़र्च में कुशा-दगी करो क्यूं कि माहे र-मज़ान में ख़र्च करना **अल्लाह तआला** की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।" (فضائل شهر رمضان مع موسوعة ابن أبي الدُّنيا ج ١ ص ٣٦٨ حديث ٢٤)

**भलाई ही भलाई :** **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते : "उस महीने को ख़ुश आ-मदीद जो हमें पाक करने वाला है। पूरा **र-मज़ान** ख़ैर ही ख़ैर (या'नी भलाई ही भलाई) है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम, इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का द-रजा रखता है।" (تَنْبِيهُ الغافِلِين ص ١٧٧)

**बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब र-मज़ान शरीफ़ की पहली रात आती है तो अ़र्शे अ़ज़ीम के नीचे से मसीरा नामी हवा चलती है जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है, इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी। इस आवाज़ को सुन कर **बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें** ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द मह़ल्लात पर खड़ी हो जाती हैं और कहती हैं : "है कोई जो हम को **अल्लाह तआला** से मांग ले कि हमारा निकाह़ उस से हो ?" फिर वोह हूरें दारोग़ए जन्नत (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से पूछती हैं : "आज येह कैसी रात है ?" (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) जवाबन तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहते हैं, फिर कहते हैं : "येह माहे र-मज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े **उम्मते मुह़म्मद** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं।" (اَلتَّرغيب والتَّرهيب ج ٢ ص ٦٠ حديث ٢٣)

**दो अंधेरे दूर :** **मन्क़ूल** है कि **अल्लाह तआला** ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : मैं ने **उम्मते मुह़म्मद** (عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को **दो नूर** अ़त़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

किये हैं ताकि वोह **दो अंधेरों** के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से महफ़ूज़ रहें। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! वोह **दो नूर** कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा : "**नूरे र-मज़ान** और **नूरे क़ुरआन**।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **दो अंधेरे** कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : "**एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का**।" (دُرَّۃُ النَّاصِحِین ص۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**र-मज़ान व क़ुरआन शफ़ाअ़त करेंगे :** **मदीने** के सुल्तान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे। **रोज़ा** अ़र्ज़ करेगा : "**ऐ रब्बे करीम** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा।" **क़ुरआन** कहेगा : "मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर।" पस दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी। (مُسند امام احمد ج۲ص۵۸۶حدیث۶۶۳۷)

**लाख र-मज़ान का सवाब :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : "जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे र-मज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये और जगह के एक लाख र-मज़ान का सवाब लिखेगा** और हर दिन एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा।" (ابنِ ماجہ ج۳ص۵۲۳حدیث۳۱۱۷)

**काश ! ईद मदीने में हो ! :** **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दियारे विलादत **मक्कए**

**मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا है। **अल्लाह तआला** ने अपने हबीबे मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ में गुलामाने मुस्तफ़ा पर किस क़दर लुत्फ़ो करम फ़रमाया है ! ऐ काश ! हमें भी **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में **माहे र-मज़ान** गुज़ारने की आज़ीम सआदत नसीब हो जाए और उस में ख़ूब इबादत की भी तौफ़ीक़ मिले और फिर **माहे र-मज़ान** गुज़ार कर फ़ौरन ही **ईद** मनाने के लिये अपने मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए ज़ियाबार पर हाज़िर हो जाएं और वहां पर रो रो कर "ईदी" की भीक मांगें और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रहमत जोश पर आ जाए और ऐ काश ! सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर-बार से हम गुनहगार बतौरे "ईदी" बे हिसाब मग़्फ़िरत की बिशारत पाने की सआदत पा लें।

*या नबी ! अ़त्तार को जन्नत में दे अपना जवार*
*वासिता सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 480)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते :** **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब **माहे र-मज़ान** आता तो शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीस दिन नमाज़ और नींद को मिलाते थे पस जब आख़िरी अ़शरह होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते।

(مسند امام احمد ج٩ص٣٣٨حديث٢٤٤٤٤)

**आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब दुआएं मांगते थे :** **एक** और रिवायत में फ़रमाती हैं : जब माहे र-मज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मु-तग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता और **नमाज़** की

कसरत फ़रमाते और **ख़ूब दुआएं मांगते**। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۱۰ حدیث ۳۶۲۵)

**आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब **माहे र-मज़ान** आता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर क़ैदी को रिहा कर देते और **हर साइल को अ़त़ा फ़रमाते**।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۱۱ حدیث ۳۶۲۹)

**क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ? :** **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان बयान कर्दा ह़दीसे पाक के हिस्से : "हर क़ैदी को रिहा कर देते" के तह़त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 142 पर फ़रमाते हैं : ह़क़ येह है कि यहां क़ैदी से मुराद वोह शख़्स है जो **ह़क़्क़ुल्लाह** या **ह़क़्क़ुल अ़ब्द** (या'नी बन्दे के ह़क़) में गिरिफ़्तार हो और आज़ाद फ़रमाने से उस के ह़क़ अदा कर देना या करा देना मुराद है।

**सब से बढ़ कर सख़ी :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में **सब से बढ़ कर सख़ी थे** और **र-मज़ान शरीफ़** में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (ख़ुसूसन) बहुत ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे। जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **र-मज़ानुल मुबारक** की हर रात में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते। जब भी ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आते तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर (या'नी भलाई) के मुआ-मले में **सख़ावत** फ़रमाते।" (بُخاری ج ۱ ص ۹ حدیث ۶)

*हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 83)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



www.dawateislami.net

**हज़ार गुना सवाब : हज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**माहे र-मज़ान** में एक दिन का **रोज़ा** रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़्ज़ल है और **माहे र-मज़ान** में एक मर्तबा तस्बीह़ करना (سُبْحٰنَ اللّٰه कहना) इस माह के इलावा एक हज़ार मर्तबा तस्बीह़ करने (سُبْحٰنَ اللّٰه कहने) से अफ़्ज़ल है और **माहे र-मज़ान** में एक **रक्अ़त** पढ़ना ग़ैरे र-मज़ान की एक हज़ार **रक्अ़तों** से अफ़्ज़ल है।" (تفسیر دُرِّ مَنْثُور ج۱ ص۴۵۴)

**र-मज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत : अमीरुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : र-मज़ान में **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में **अल्लाह तआ़ला** से मांगने वाला मह़रूम नहीं रहता। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص ۳۱۱ حدیث ۳۶۲۷)

**सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वोह लोग कितने ख़ुश नसीब हैं जो इस माहे मुबारक में ख़ुसूसिय्यत के साथ **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** अज़् इब्तिदा ता इन्तिहा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही पर मुश्तमिल होता है क्यूं कि तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, दुआ़ और सलातो सलाम वग़ैरा सब **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में दाख़िल हैं। दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ की ब-रकात की एक "म-दनी बहार" मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे

**छ[6] बेटियों के बा'द औलादे नरीना : मर्कज़ुल** औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई की म-दनी बहार अ़र्ज़ करता हूं : ग़ालिबन 2003 सि.ई. की बात है, एक इस्लामी भाई ने उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान) में शिर्कत

की दा'वत इनायत फ़रमाई। उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं छ[6] बेटियों का बाप हूं, मेरे घर में फिर विलादत मु-तवक़्क़ेअ़ है, दुआ़ फ़रमाइये कि अब की बार **नरीना औलाद** हो। उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए फ़रमाया : ह़ज के बा'द ता'दाद के लिहाज़ से **आ़शिक़ाने रसूल** के सब से बड़े इज्तिमाअ़ (मुलतान शरीफ़) में आ कर दुआ़ मांगिये न जाने किस के सदक़े में बेड़ा पार हो जाए। उस की बात उन के दिल को लग गई और वोह **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (मुलतान शरीफ़) में ह़ाज़िर हो गए। वहां के रूह़ परवर मनाज़िर का बयान करने के लिये उन के पास अल्फ़ाज़ नहीं थे, उन्हें ज़िन्दगी में पहली बार एक ज़बर दस्त रूह़ानी सुकून नसीब हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ के चन्द ही रोज़ के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें **चांद सा म-दनी मुन्ना** अ़त़ा फ़रमाया, घर वालों की ख़ुशी बयान से बाहर थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें मज़ीद एक और **म-दनी मुन्ने** से भी नवाज़ दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की ह़ैसिय्यत से ख़िदमत की सआ़दत भी मिली।

**40 नेक मुसल्मानों के मज्मअ़ में एक वली होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन **आ़शिक़ाने रसूल** में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی होते होंगे। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल। (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) उ़-लमा फ़रमाते हैं : **जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।"**

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 184, فيض القدير ج١ ص٤٩٧ زيرِ حديث٧١٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

**बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले, हर ह़ाल में शुक्र कीजिये : बिलफ़र्ज़** दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी भलाई किस बात में है इस को यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर ह़ाल में पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह **बेटा** दे तब भी उस का शुक्र, **बेटी** दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर ह़ाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये। पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** की आयत नम्बर 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है :

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व क़ुदरत वाला है।

"**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में आयत नम्बर 50 के इस ह़िस्से (जिसे चाहे बांझ कर दे) के तह़्त है : (या'नी) "कि उस के औलाद ही न हो, वोह (या'नी **अल्लाह तआ़ला**) मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَا السَّلَام के सिर्फ़ **बेटियां** थीं, कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द (या'नी बेटे) थे, कोई दुख़्तर (या'नी बेटी) हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह तआ़ला** ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साहि़ब ज़ादियां।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 898)

**हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद : दा'वते इस्लामी** के

इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ 48 सफ़ह़ात पर मुशतमिल रिसाले, **"ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी"** सफ़ह़ा 7 ता 8 पर है : **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार फ़रज़न्द होने का अगर्चे "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में ज़िक्र है मगर इस में इख़्तिलाफ़ है, तीन शहज़ादों का भी क़ौल है और दो का भी। चुनान्चे "तज़्कि-रतुल अम्बिया" सफ़ह़ा 827 पर है : आप (صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم) के तीन बेटे थे : **क़ासिम, इब्राहीम, अ़ब्दुल्लाह।** ख़याल रहे कि त़य्यिब, मुत़य्यब, त़ाहिर और मुत़ह्हर इन्हीं (या'नी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) के अल्क़ाब थे, येह कोई अ़ला-ह़दा बेटे नहीं थे। (तज़्कि-रतुल अम्बिया, स. 827) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **"सीरते मुस्त़फ़ा"** सफ़ह़ा 687 पर लिखते हैं : इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलादे किराम की ता'दाद छ[6] (तो यक़ीनन) है। दो फ़रज़न्द ह़ज़रते **क़ासिम** व ह़ज़रते **इब्राहीम** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और चार साह़िब ज़ादियां ह़ज़रते **ज़ैनब** व ह़ज़रते **रुक़य्या** व ह़ज़रते **उम्मे कुल्सूम** व ह़ज़रते **फ़ात़िमा** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ) लेकिन बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप صَلَّى اللّٰه تعالى عَلَيْهِ وَسَلَّم के एक साह़िब ज़ादे **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) भी हैं जिन का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है। इस क़ौल की बिना पर ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद **सात** है या'नी तीन साह़िब ज़ादगान और चार साह़िब ज़ादियां। (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 687)

**र-मज़ान का दीवाना : मुह़म्मद** नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था। जब **र-मज़ान शरीफ़** का मु-तबर्रक महीना आता तो वोह पाक साफ़ कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा करता। लोगों ने उस से पूछा : तू ऐसा क्यूं करता है ? उस ने जवाब दिया : येह महीना रह़मत ब-र-कत, तौबा और मग़्फ़िरत का है, शायद **अल्लाह तआ़ला** मुझे मेरे इसी अ़मल के सबब बख़्श दे। जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह तआ़ला**

ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ? उस ने जवाब दिया : **"मेरे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे एह़तिरामे र-मज़ान शरीफ़ बजा लाने के सबब बख़्श दिया ।"** (دُرَّةُ النَّاصِحِين ص٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**अल्लाह बे नियाज़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ **माहे र-मज़ान** के क़द्रदान पर किस द-रजा मेह्रबान है कि साल के बाक़ी महीने छोड़ कर सिर्फ़ **माहे र-मज़ान** में इबादत करने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दी । इस ह़िकायत से कहीं कोई येह न समझ बैठे कि अब तो (مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई !! सिर्फ़ **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे । **प्यारे इस्लामी भाइयो !** दर अस्ल बख़्शना या अ़ज़ाब करना येह सब कुछ **अल्लाह तआ़ला** की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है, वोह बे नियाज़ है, अगर चाहे तो किसी मुसल्मान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल पर ही अपने फ़ज़्ल से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को मह़्ज़ एक छोटे से गुनाह पर अपने अ़द्ल से पकड़ ले । पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 284 में इर्शादे रब्बे बे नियाज़ है :

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ
(پ٣،البقرة:٢٨٤)

**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो जिसे चाहेगा (अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा (अपने अ़द्ल से) सज़ा देगा ।

*तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म*
*देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का*

**तीन के अन्दर तीन पोशीदा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये, न जाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए और कोई छोटे से छोटा गुनाह करना नहीं चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर **अल्लाह तआ़ला** नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अ़ज़ाब

घेर ले। ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म सय्यिदुना **अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़** मुह़द्दिस कोट्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है, ﴿1﴾ अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में और ﴿2﴾ अपनी नाराज़ी को अपनी ना फ़रमानी में और ﴿3﴾ अपने औलिया को अपने बन्दों में।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١) येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़क़ीहे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "लिहाज़ा हर त़ाअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूं कि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए। ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सग़ीर (या'नी छोटी) हो। म-सलन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर मुम्किन है कि इस बुराई में ही ह़क़ तआ़ला की नाराज़ी मख़्फ़ी (या'नी छुपी हुई) हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।" (अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 60)

**कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई : रह़मत के त़लब गारो !** जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह इसी के सबब करम फ़रमा देता है। जैसा कि **एक औ़रत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।** (بُخاری ج۲ص ٤٠٩ حديث٣٣٢١) एक ह़दीस में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक **दरख़्त** को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे। **अल्लाह तआ़ला** ने ख़ुश हो कर उस की **मग़्फ़िरत** फ़रमा दी। (مُسلم ص١٤١٠ حديث١٩١٤) एक सह़ीह़ ह़दीस में **तक़ाज़े** (या'नी क़र्ज़ के मुत़ा-लबे) **में नरमी** करने वाले एक शख़्स की **नजात** हो जाने का वाक़िआ़ भी आया है। (بُخاری ج ۲ ص ١٢ حديث ٢٠٧٨) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** के वाक़िआ़त जम्अ़ करने जाएं तो इतने हैं कि जम्अ़ करना मुश्किल हो जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

# नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

**मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه"** अपनी इस्लाह़ के लिये "**मदनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه

0133186


मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

देहली :- मक्तबतुल मदीना, 421, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net